उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कुल पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय 'वेदना का स्वरुप' है, जिसके अन्तर्गत वेदना को और उसके स्वरुप को समझने की चेष्टा की गई है। हमने पाया कि वेदना एक भाव है और कवि समाज में रहते हुए समाज में घटने वाली घटनाओं से प्रभावित होता है। ये घटनाएँ सुखद् भी हो सकती हैं और दुखद् भी कवि जिस घटना के सम्पर्क में आता है वैसी ही भावाभिव्यक्ति की कविता की रचना करता है। इस अध्याय में मूल भाव सुख और दुख का विवेचन किया गया है, आलम्बन के विचार से भावों में होने वाले रुपान्तरण को समझने की चेष्टा की गई है। भाव की प्रकृति और जीवन में उसके स्थान का विवेचन किया गया है। वेदना जब घनीभूत होती है तो वह करुण रस को प्राप्त होती है। वेदना के इस पक्ष को समझने की चेष्टा अध्याय के अगले हिस्से में की गई है। साथ ही हिन्दी साहित्य में वेदना की परंपरा और उसके स्वरुप को स्पष्ट करने की कोशिश हमने की है।

शोध के द्वितीय अध्याय में निराला के काव्य में जन की स्थिति, जन सामान्य वेदना के आलम्बन विभाव के रुप में, जन की सामाजिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, औरर आर्थिक स्थिति के विवेचन के साथ-साथ जनता के असंतोष को समझने का प्रयास किया गया है। शोध के अगले अध्याय में निराला वेदना की अनुभूति कैसे करते हैं, और उनके काव्य में उस अनुभूति के अभिव्यक्ति का स्वरुप क्या है? इसे स्पष्ट करने का प्रयास हुआ है। हमने पाया कि निराला अपने काव्य में वेदना की अभिव्यक्ति निम्न माध्यमों से करते हैं -

क) पात्रों के माध्यम से
ख) घटना के माध्यम से
ग) प्रकृति-चित्रण के माध्यम से
घ) भक्ति-भावना के माध्यम से

ङ) प्रतीक-विधान के माध्यम से
च) आत्म-प्रसंगों के माध्यम से

निराला ने उपरोक्त माध्यमों से अपने काव्य में वेदना को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। शोध के इस अध्याय में इसी तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है। चतुर्थ अध्याय में निराला के समकालीन परिस्थिति को समझते हुए वेदना की अनुभूति को अभिव्यक्त किया गया है। निराला का समय देश की पराधीनता का समय था और पराधीनता के कारण जनता व्यथित थी। निराला पराधीनता से उत्पन्न वेदना की अभिव्यक्ति अपने काव्य में करते हैं। साथ ही राष्ट्र गौरव का गुणगान भी करते हैं। निराला काव्य में रहस्यानुभूति और विवेकानन्द के प्रभाव को भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इस तथ्य को विवेचित करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है। अंतिम अध्याय में निराला की वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति को महादेवी और प्रसाद की वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति के साथ तुलना की गई है।

युग प्रवर्तक कवि निराला कवि और गद्यकार दोनों रुपों में हिन्दी साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। निराला के साहित्य में अनुभूति की गहराई और भाषा की सहजता देखने को मिलती है, क्योंकि कवि निराला ने जो स्वंय भोगा वही उनके अन्तर्मन से प्रस्फुटित हुआ। इसी के माध्यम से हमने यह महसुस किया कि उनके काव्य वेदना के अधिक निकट है, जो युगीन चेतना और दुखद परिस्थितियों से प्रभावित होता है। निराला के काव्य का गहनता से अनुशीलन किया जाए तो उसमें मानव मन की अनेक गुत्थियों, ग्रन्थियों के समग्र भाव उजागर होते हैं। उनके काव्य में मानवीय संवेदना तथा मानवीय मूल्यबोध की अनुँगूज व्याप्त है। वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय तथा अध्यात्मिक भूमिकाओं में अभिव्यक्त उनका स्वर अनेक स्थानों पर वेदना से ओतप्रोत दिखाई देता है।

निराला काव्य का अध्ययन करते हुए हमने पाया कि वे एक ओर तो छायावादी चेतना से प्रेरित होकर काव्य में वैयक्तिक अनुभूतियों को अपनी सहज अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं तो वहीं दूसरी ओर समाज के उपेक्षित वर्ग के दुख-दर्द को समझकर उसकी वेदना को पाठको के समक्ष प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं।

निराला ने पहली बार साहित्य के लिए ऐसे विषयों को चुना जिस पर अबतक किसी ने ध्यान नहीं दिया था। उनेहोंने अपने काव्य में सड़क के आदमी को, साधारण आदमी को महत्व दिया और ऐसा करते हुए उनके काव्य में साधारण आदमी की पीड़ा का उजागर होना स्वभाविक ही था। उनकी दृष्टि समाज के दीन-हीनों, गरीबों, भिक्षुओं, विधवा आदि के प्रति संवेदनशील थी। उनके मन में अभावग्रस्तों के प्रति शुरु से करुणा थी । इसलिए उन्होंने अपने काव्य में इन्हीं पात्रों को विषय बनाया।

"निराला-काव्य में वेदना की अभिव्यक्ति का मूल कारण सामाजिक और आर्थिक विषमता में ही निहित है। इनकी काव्य में व्यक्त वेदना कपोल-कल्पित न होकर लोक-जीवन की सशक्त एवं यथार्थ अभिव्यक्ति है। तत्कालीन शोषण व्यवस्था ने समाज में आर्थिक असंतुलन उत्पन्न कर दिया था। यह विषमता समाज में विविध रुपों में व्याप्त थी। स्वयं निराला ने अपने जीवन में अर्थाभाव के ताण्डव नृत्य को देखा था। इसी कारण इन्होंने अर्थाभाव से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।" निराला ने देखा कि पूँजीपति वर्ग दीन-हीनों का प्रर्याप्त शोषण कर रहा था, जिससे समाज में आर्थिक विषमता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। ऐसी स्थिति में अमीर और अधिक अमीर और गरीब और अधिक गरीब होते गये। निराला ने आर्थिक रुप से व्यथित जनता के दुख दर्द को समझा और उसे अपने काव्य का विषय बनाया। लोक-जीवन के व्यथित यथार्थ का चित्रण करने में निराला ने अपार सफलता प्राप्त की।

प्रस्तुत शोध में मेरी उपलब्धियों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है -

निराला का समग्र काव्य पीड़ा, दुःख, विषाद और वेदना की आग में झुलसा हुआ है। जिसमें कवि का अपना जीवन भले ही झुलस गया हो लेकिन लोगों को उन्होंने शीतलता ही प्रदान की है। निराला भेद-रहित, लोक-कल्याणकारी समाज की स्थापना करना चाहते थे, इसलिए इन्होंने भूख, गरीबी, वर्ग-विषमता, अन्याय, शोषण, उत्पीड़न इत्यादि का चित्रण करके इस शोषणकारी नीति से मुक्ति की अनिवार्यता पर जोर दिया है। हिन्दी साहित्य में वेदना विशद रुप में वर्णित हुई है। यह वेदना व्यक्तिगत भी है और समाजगत भी। व्यक्ति के रुप में दुःख झेलना और फिर उसी दुःख को समाज में देखकर उसकी अभिव्यक्ति करना रचनाकार का धर्म और उद्देश्य बन जाता है। हिन्दी साहित्य में वेदना का स्वरुप कई रुपों में अभिव्यक्त हुआ है किन्तु वेदना का मुख्य रुप विछोह और वियोग की स्थिति है। वाल्मीकि ने क्रौच पक्षी के वियोग को देखकर रामायण की रचना कर डाली, गौतम बुद्ध ने जब संसार के दुःख और कष्ट देखे तो वे सत्य और मोक्ष की प्राप्ति के लिए निकल पड़े। गौतम बुद्ध, तुलसी, कबीर, मीरा, ज्ञानेश्वर इन सबके जीवन का दुःख और पीड़ाएँ ही उनके रचनाकर्म में प्रेरक शक्ति बन गये। कबीर के काव्य में जो वेदना है वह सांसारिक न होकर आध्यात्मिक है। लेकिन वे वेदनाएँ भी विरह जन्य हीं है जो कबीर को राम के विरह से व्यथित करती है। बड़े कवि जिस द्वन्द और विषमता की अनुभूति का चित्रण करते हैं, उस जीवन से मुक्त जीवन का स्वप्न भी अवश्य ही दिखा देते हैं।

भाव की साधारण स्थिति तथा उसके आवेग में अंतर स्पष्ट है। भाव के बार-बार उत्तेजित होने पर भी अगर उसके अनुसार कार्य न किया जाय और चित्त को शांत कर दिया जाए, तो धीरे-धीरे कुछ दिनों के बाद वह भाव निष्क्रिय हो जाता है। भाव की प्रेरणा के अनुसार कार्य न करने पर हृदय अपमानित होकर उस वृत्ति को ही छोड़ देता है। किसी दुखी के दुख को देखकर हृदय में करुणा उत्पन्न होती है और उस करुणा की

प्रेरणा के अनुसार दुखी की सहायता न की जाए, तो एक दिन वह समय भी आयेगा जब किसी के दुख को देख कर करुण भाव उत्पन्न ही न होगा और उस भाव के लिए हृदय जड़ हो जायेगा। किसी दृश्य को देख कर हृदय में भावावेग उत्पन्न होता है और उसके अनुसार कार्य करते रहने पर मनुष्य की प्रकृति में वह एक स्थान प्राप्त कर लेता है। काव्य की परम्परा वेदना की रही है और इसी परम्परा के निर्वाह के लिए कवियों ने अपने काव्य में वेदना को स्थान दिया है।

कवि समाज में रहता है और उस पर सम-सामायिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है यह प्रभाव अनुकूल भी हो सकता है और प्रतिकूल भी। अनुकूल परिस्थिति में हर्ष और प्रतिकूल परिस्थिति में विषाद उत्पन्न होता है। प्रस्थितियों की प्रतिकूलता से व्यथित कवि अपनी वेदना की अभिव्यक्ति काव्य के माध्यम से करता है। कवि कवि होने के साथ-साथ साधारण मनुष्य भी होता है जिसके निजी जीवन में दुख आता जाता रहता है, उसके अपने उस दुख का प्रभाव भी काव्य में देखा जा सकता है।

भावों की सूक्ष्मता पर गंभीरता से विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि भावों को शक्त और अशक्त इन दो रुपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। क्रोध, उत्साह, साहस आदि शक्त भाव हैं और करुणा, दया, क्षमा, सहानुभूति आदि अशक्त भाव। उच्चादर्श जीवन का निर्माण केवल शक्त भावों के द्वार नही हो सकता, यथार्थ जीवन की सार्थकता के लिए अशक्त भावों का अवलंबन होना भी आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति किसी के दुख को देखता है तो उसके हृदय में चोट पहुँचती है और वह उस चोट को दूर करने के लिए उसका उपकार करता है। यदि किसी के दुख को देखकर मनुष्य के हृदय में संवेदना ही न हो तो वह उपकार करने के लिए प्रेरित ही न होगा, इस प्रकार मनुष्य वास्तव में अपने दुख को दुर करने के लिए ही परोपकार, दया, क्षमा, कृपा करता है। संसार के सभी व्यापारों के लिए संवेदना प्रधान है। इसके बिना कोई काम नहीं हो सकता। जब कभी व्यक्ति दूसरों की धारणा के अनुसार अपने को अशक्त समझ बैठता है तो वह दुखी होता है तब अपनी इस अशक्तता को दूर करने के लिए पूरी चेष्टा करता है। संसार में ऐसे लोग भी देखे जाते हैं जो दूसरों की धारणा को भ्रम प्रमाणित करने के लिए दुस्साहस पूर्ण कार्य

कर बैठते हैं। यह भाव दूसरों की दृष्टि में अपने को कम समझना ही है। अपने को कम या उच्च समझने की भ्रमपूर्ण भावनाओं से मनुष्य के जीवन की दिशाएँ प्रायः बदल जाया करती है।

मनुष्य के हृदय में अपने संबंध में जो भी संवेदना उठती है उसी के अनुसार उसके जीवन का निर्माण होने लगता है। मानव हृदय भावों का संतुलन बनाए रखने की चेष्टा करता है। जीवन में जब बंधन आता है, गति में अवरोध उत्पन्न होता है, तब भावों की क्रिया उसे तोड़ने का प्रयत्न करती है। मनुष्य जैसा है, जिस स्थिति में है वैसा कहने पर वह प्रसन्न नही होता जितना वह है उससे बड़कर कहने पर उसे प्रसन्नता होती है। अतः जो वह नही है वही बनने या समझे जाने की भावना से वह प्रसन्न होता है। इस प्रकार की भावना के कारण ही प्रसन्नता की चाट पाकर वह खुशामद पसंद और न पाकर आत्म-प्रशंसी बन जाता है। कल्पना के माध्यम से तृप्ति मिलने के लिए वह अपने मुख से अपनी प्रसंसा करता है। इस प्रकार के मनुष्य की तर्क शक्ति मारी जाती है और वे अपने उपर कहे गये व्यंगों को समझने में असमर्थ होते हैं। जीवन की दिशा बदलने में भाव बड़ा महत्व रखता है।

जीवन की प्रकृति भाव और विचार की सत्ता से भिन्न नही है। उच्च भाव और विचारों से प्रेरित होकर कर्म करने वाले व्यक्ति ही महापुरुष कहलाते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जीवन की उच्चता या नीचता का विचार भावों की क्रिया के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जिसके हृदय में भावों की सच्चाई है, उच्चता है वह प्रतिभा सम्पन्न न होने पर भी अपने जीवन की एक मर्यादा रखता है। यदि किसी के हृदय में चोरी करने का भाव है, तो सिर्फ भाव होने के कारण ही वह राज नियम के अनुसार दंडनीय नहीं जो जाता, परंतु धर्म नियम के अनुसार तो वह अपराधी हो ही जाता है। यह भाव यदि उसके हृदय में जम गया है तो उसके जीवन के सारे कर्म उसी से प्रेरित होंगे। सुविधा मिलने पर वह चोरी कर सकता है। इस नियम के अनुसार पहले भाव और फिर कर्म के लिए मनुष्य प्रयत्नशील होता है।

काव्य सर्जन में जो मूल विधायक तत्त्व स्वीकार किए गये हैं भाव उनमें से एक है। यही भाव कवि जीवन से और सामाजिक जीवन से भी सम्बन्ध रखते हैं। कवि जीवन और सामाजिक जीवन में दुख और पीड़ा की स्थिति आती है मनुष्य जीवन की यही पीड़ा काव्य में वेदना के रुप में प्रस्फुटित होती है। मनुष्य के हृदय में संसार की संवेदनाओं के कारण कई प्रकार के विकार आते रहते हैं जो मिलकर भाव की संज्ञा प्राप्त करते हैं। मूल रुप से भाव दो ही प्रकार के होते हैं - सुख और दुख। मनुष्य के हृदय में जो कई प्रकार के संश्लेषित भाव उत्पन्न होते हैं उनमें से वेदना भी एक है, जो दुखात्मक स्थिति से उत्पन्न होता है।

भाव वह है जो भावित् करे अर्थात सहृदय के चित्त में व्याप्त करने वाला तत्त्व बताया गया है। यहाँ भावों का आशय उन तत्त्वों से है जो काव्यार्थ सहृदय के चित्त में व्याप्त करते हैं। जब मनुष्य में सम्बन्धज्ञान होने लगता है तभी से उस पर दुख के उस भेद की नींव पड़ जाती है जिसे करुणा कहा जाता है। जब बच्चे माँ को रोते हुए देखते हैं तो स्वयं भी रोने लगते हैं, ऐसा इसलिए की मनुष्य की यह प्रवृत्ति है कि जब वे दूसरों के दुख को देखते हैं तो स्वयं भी उस दुख का अनुभव करते हैं। किसी और के दुख को देख कर दुखी होने का नियम जितना व्यापक है उतना किसी को सुखी देखकर सुखी होने का नहीं।

हिन्दी काव्य में वेदना का स्वरुप और स्थिति कालक्रम के अनुसार हर युग में भिन्न-भिन्न है। हर युग के कवियों ने वेदना को अपने-अपने ढ़ंग से अभिव्यक्त किया है। निराला का काव्य अनेक भावों से भरा हुआ है जिसमें प्रकृति चित्रण से लेकर मानवीय भावों की अभिव्यक्ति हुई है। मैंने अपने अध्ययन में यह समझने की चेष्टा की है कि उनके इन सभी भावमयी काव्यों में वेदना कैसे और किस रुप में व्यक्त हुई है? हमने पाया कि छायावादी कवि होने के नाते उनके काव्य में वेदना प्रधान है। अन्य छायावादी कवियों की तरह इन्होंने भी अपने काव्य में वेदना को महत्व दिया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की कविताएँ समाज से सम्बन्धित एक जागरुक कवि की कविताएँ है, जिसमें समाज के सभी रंग घुले-मिले हैं। इन्होंने आम आदमी के सुख-दिख

को उसके जीवन के विविध पहलुओं को अपने काव्य में व्यक्त किया है। निराला के काव्य में जो लोक चेतना का भाव है वह उनके काव्य को ऊर्जा प्रदान करने सक्षम हुआ है। निराला वर्ण व्यवस्था आधारित विसंगतिओं को दूर करने के प्रबल पक्षपाती थे, इसलिए वे सामाजिक विसंगतिओं को भुलाकर लोगों से उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने का आग्रह करते हैं। निराला की लोक कल्याणकारी भावनाएँ उनका जीवन आदर्श थी जो विश्व-बन्धुत्व, सामाजिक समानता और देशप्रेम से प्रेरित है। निराला ने सामाजिक विसंगतिओं तथा समस्याओं को निकट से देखा और इन सभी परिस्थियों के प्रति सचेत रहकर जन विरोधी क्रूर नीतियों पर सीधा प्रहार किया। निराला के काव्य में जन सामान्य की वेदना आलम्बन विभाव के रुप में अभिव्यक्त होती हुई दिखाई देती है। इनके मन में समाज के दलितों, शोषितों, पीड़ितों के प्रति अपार सहानुभूति प्रतीत होती है। **दीन** कविता में इसकी अभिव्यक्ति सहज ही देखी जा सकती है। वेदना की की निरंकुश क्रीड़ा से पीड़ित व्यक्ति की कारुणिक दृश्य का सजीव वर्णन करते हैं। मानव समाज की इन विडम्बनाओं को परखकर निराला का निश्छल मन करुणा-विगलित हो जाता है। **तोड़ती पत्थर** नामक कविता में अभिजात्य वर्ग के अहं की प्रतिमूर्ति अट्टालिकाओं के सम्मुख इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली उस असहाय युवती के आत्म सम्मान और गौरव को कम नही होने देते। उसकी तन्मयता और कर्म के प्रति श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने उस मजदूरनी की दयनीय स्थिति का परिचय दिया है जो तेज धूप में भीषण गर्मी और लूँ से परेशान अपने हथौड़े से पत्थर पर प्रहार करती हुई अपनी परिचय और क्षमता का बोध करवाती है। जहाँ मजदूरनी के लिए छायादार पेड़ भी नही है वही दूसरी ओर पास ही अमींरों के हवादार बंगलें हैं, यहाँ निराला समाजिक विषमता के कारण मानव-मानव में जो भेद है उसे चित्रित करते हैं । दमित, दलित और शोषित के प्रति उनकी संवेदना सहज ही देखी जा सकती है।

निराला समाज के यातनाग्रस्त मानव के दुख-दर्द को निजी समझते हैं। वैधव्यपूर्ण जीवन यापन करने वाली स्त्री के प्रति इनका दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण रहा है। इन्होंने विधवा को 'इष्टदेव की मंदिर की पूजा' कहकर उसकी निर्मलता और चारित्रिक पवित्रता को उजागर किया है तथा विधवा को यातनाग्रस्त करने वाले समाज पर तीक्ष्ण प्रहार किए हैं।

निराला का रचनाकाल ऐसा है, जबकि देश में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति से त्रस्त था। ऐसे में चारों तरफ सुख हो यह सम्भव न था। निराला ने यह सब महसुस किया और उनके चारों तरफ जो था उसी का चित्रण अपने काव्य में किया यही कारण है कि उनका काव्य विषाद ग्रस्त है। निराला की वेदना का स्वरुप एक साधारण मनुष्य की वेदना का ही स्पष्ट स्वरुप है। राम की शक्तिपूजा जो निराला की बहुचर्चित कविता है इसमें राम का चरित्र निर्माण कवि ने कुछ इस तरह किया है जिसमें कवि की अपनी व्यक्तिगत वेदना उभर कर सामने आती हुई प्रतीत होती है।

हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग से लेकर परवर्ती काव्य में प्रकृति चित्रण की प्रधानता तो हमेशा रही है परंतु छायावादी कवियों के यहाँ प्रकृति के संश्लिष्ट बिम्ब मिलते हैं। छायावादी कवियों का इन्द्रियबोध सघन है, संश्लिष्ट है, घुला मिला है। दूसरे स्वच्छन्दतावादी कवि प्राकृतिक दृश्यों से मन पर पड़नेवाले प्रभाव को कहते चलते हैं- वाह कैसै सुन्दर पुष्प है इत्यादि। छायावादी कवियों का भावबोध गहरा है वह मन पर पड़ने वाले प्रभाव को सीधे-सीधे कथन के माध्यम से व्यक्त नहीं करते अपितु उस प्रभाव को व्यंजित करते हैं। छायावादी कवियों ने मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध को निकटता प्रदान की है, वे एक दूसरे से गहरे रुप में जूड़े हुए हैं। इसलिए छायावादी प्रकृति अधिक चेतन है।

गाँधी जी के दक्षिण भारत से लौटने पर कांग्रेस की क्रिया-कलापों में नया मोड़ आया। सत्याग्रह आन्दोंलन, स्वदेशी के प्रचार, छुआ छुत का विरोध, दिन्दु मुसलमानों की एकता पर बल देकर महात्मा गाँधी ने देश के युवा वर्ग के साथ-साथ किसानों, मजदूरों में नई उर्जा भर दी। निराला की विचार धारा में इन आन्दोलनों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। निराला क्रांतिकारी आन्दोंलनों से भी कम प्रभावित नही हुए थे, बल्कि इसका प्रभाव कुछ ज्यादा ही था, इसका कारण था उनका खुद का उग्र स्वभाव। निराला के मानस पर बंगाल की धरती का प्रभाव देखा जा सकता है। अलग-अलग जगह के अलग-अलग गुण होते हैं और चूंकि कलकत्ता में बामपंथियों का प्रभाव था इस कारण

उनके काव्य में इसकी अनुगूँज सुनाई पड़ती है। बैसवाड़े का पौरुष, गरीबी, निरक्षरता ने उनके मानस को उद्विग्न किया और साथ ही कलकत्ते की क्रांतिकारिता ने उन्हें समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। इसी कारण निराला की कविताओं का गाँधीवादी प्रभाव से मुक्त होना अस्वाभाविक न था, लेकिन गाँधी जी के प्रति उनके मन में अटूट श्रद्धा और विश्वास था। 'सुधा' की टिप्पणियों में गाँधी जी के क्रिया-कलापों और उनके आन्दोलनों, नीतियों का जबरदस्त समर्थन किया गया।

निराला का दुख और विषाद उनके समकालीन कवियों से कहीं अधिक बर्हिमुखी है। अन्य कवियों में वेदना का मुख्य स्वरुप वियोग शृंगार प्रधान है। जबकि निराला के काव्य में बस्तुन्मूखी तत्त्व की प्रधानता है। महादेवी ने अपने अन्तर्मुखी स्वभाव के कारण अपने दुख और वेदना को बाह्यजगत् से जोड़ने के बदले अन्तर्जगत् से जोड़ा। निराला के काव्य में तथ्यों के प्रति मोह है और बहिर्मुखता है।

निराला जी ने सदा यही समझा कि मनुष्य में सन्यासी ही सबसे बड़ा है। स्वामी विवेकानन्द का आन्दोंलन सन्यासियों का वैराग्य मात्र न था, उसमें राजनीति दासता और सामाजिक रुढ़ियों के लिए चुनौती का स्वर भी था। अपने को दीन और निक्रिष्ट समझने वाले मध्यवर्ग को स्वामी जी ने गर्व से जीने के लिए वेदांत के दर्शन कराये। निराला स्वामी जी से प्रभावित थे और उन्होंने सेवा पारारम्भ नाम की कविता में स्वामी जी के इन रुपों का वर्णन भी किया है।

छायावाद के सम्बन्ध में सबसे भ्रांतिपूर्ण धारणा यह रही कि अधिकांश विद्वान छायावाद और रहस्यवाद में कोई निश्चित विभाजन रेखा नहीं खींच पाये। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा - छायावाद का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम का अनेक प्रकार से चित्रण करता है

निराला की कविताओं में भक्ति एवं दर्शन आरंभ से अंत तक देखने को मिलती है,

किन्तु प्रथम चरण में भक्ति की तुलना में दर्शन की उपस्थिति अधिक दृष्टिगत होती है। स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित नवोदित वेदांत में अन्तर्निहित अद्वौत दर्शन का प्रभुत्व निराला के काव्य में छाया हुआ है।

रुढ़िग्रस्त समाज में पुरुषों की ऐसी स्थिति है कि वह अपनी आत्मभिव्यक्ति भी खुलकर कर सकने में असमर्थ रहता है, तो पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति क्या होगी इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। ऐसे में भी महादेवी ने अपने गीतों में वैयक्तिकता की अभिव्यक्ति की और उसके लिए उन्हें विरोध भी झेलना पड़ा। ऐसा हुआ तो महादेवी ने रहस्य का सहारा लिया। अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए रहस्यवाद का आश्रय ग्रहण किया। स्थूल धार्मिक आवरण तो वे ले नहीं सकती, इसलिए ऐहिक क्षुद्रता से उसे बचाने के लिए उसे रहस्यात्मकता के आसन पर प्रतिष्ठित किया । महादेवी वर्मा ने नारी होने के कारण ऐसा किया यह तो समझा जा सकता है, लेकिन पुरुष होकर प्रसाद ने भी 'आँसू' के दूसरे संस्करण में उसे लोकमंगलकारी और रहस्यात्मक बना ड़ाला। जबकि 'आँसू' का प्रथम संस्करण शुद्ध ऐहिक प्रेम की विरह वेदना से ओत-प्रोत है। लेकिन यह निराला ही है, जो कहते हैं कि संपादकों के गुन गिन-गिन कर घास नोच-नोच कर इधर उधर फेकते थे। उस समाज व्यवस्था को भी याद करते हैं जिसमें वे अपनी कन्या का समुचित पालन-पोषण करने में भी असमर्थ रहते हैं। यह निराला ही है जो तमाम सामाजिक रुढ़ियों को चुनौति देते हुए अपनी कन्या के रुप का वर्णन खुलकर कर सके यहाँ तक कि 'पुष्प सेज तेरी स्वयं रची' कहने से भी नहीं हिचकिचाते।

प्रसाद वेदना को एक शाश्वत चेतना के रुप में ग्रहण करता है। बौद्ध दर्शन के दुखवाद का संकेत लहर के गीतों में मिलता है। 'आँसु' की प्रारंभिक पंक्तियों का भावावेश वेदना दर्शन में बौद्धिकता को अपना लेता है और इस तरह वेदना व्यष्टि से समिष्टि पर पहुँचती है। 'आँसु' केवल कवि की आत्माभिव्यक्ति न होकर व्यापक दर्शन में परिवर्तित होता है। अब तक जो वेदन-ज्वाला प्रणयी के अन्तर में जलती हुई देख रहा था वह ज्वाला कण-कण में व्याप्त हो जाती है। प्रसाद का वेदना दर्शन गीतिकाव्य को शक्ति देता

है। प्रेमी आरंभ में रुदन करता है। उसे बीते हुए क्षण बार-बार याद आते हैं, और वह प्रेयसी के रुप पर रीझ उठता है। अन्त में वह वेदना से सन्धि करता है। प्रसाद के साहित्य में प्राप्त वेदना की छाया उसे अस्वस्थ नहीं बनाती। 'स्कन्दगुप्त' आन्तरिक पीड़ा लेकर भी अपने उद्देश्य स्थापन में सफल होता है। वेदना को प्रसाद नियति से सम्बन्धित करते है। यह एक अदृश्य शक्ति है जो मानव की गतिविधि का संचालन करती है।

'राम की शक्तिपूजा' एक ऐतिहासिक रचना है। जिसमें राम की वेदना में कवि को अपनी निजी वेदना का समन्वय हुआ सा प्रतीत होता है। कल्पना की नूतन शैली में कवि ने इसे मौलिक रुप में प्रस्तुत किया है। इसमें मुख्यतः राम रावण के युद्ध, राम का पराजय, युद्ध की भीषणता, सीता विषयक राम की पूर्व कालीन स्मृति, राम की ग्लानी और हताशा, महाशक्ति की पूजा, देवी का राम के लिए वरदान आदि प्रसंगों का मार्मिक चित्रण हुआ है। लेकिन कविता में राम और उनका अन्तः संघर्ष ही अभिव्यक्त हुआ है। युद्ध में पराजय, गहरा अवसाद यह सब निराला के निजी जीवन के ही भोगे हुए हैं। स्पष्ट है कि कविता का प्रतिपाद्य निराला के अपने निजी जीवन से काफी हद तक जुड़ा हुआ है। कवि परिस्थितियों से संघर्ष करता है किन्तु उससे हार नहीं मानता। ठीक वैसे ही जैसे 'राम की शक्तिपूजा' के राम युद्ध में संघर्ष करते हैं और अंततः शक्ति की साहायता से विजयी होते हैं। निराला की यह आशावादिता उनके अपने जीवन को लेकर भी है ऐसा प्रतीत होता है।

अत्मा में परमात्मा का अंश सदैव विद्यमान रहता है, किन्तु विषय वासना में लिप्त होकर आत्मा माया के जल में फँसती रहती है और स्वयं को पीड़ित अनिभव करदती रहती है। छटपटाती हुई आत्मा माया के इस बंधन से मुक्त होने के लिए बेचैन होती है तब जब उसे परम तत्त्व की याद आती है और उसे उस परब्रम्ह से जुड़ने की अभिलाषा होती है। उसे यह संसार सारहीन लगता है। जिस विषय वासना पर वह पहले

लट्टु रहता था वही उसे अब बासी और फीकी लगती है और वह परमात्मा की ओर आकर्षित होता है।

निराला जीवन भर संघर्ष करते रहे। आभाव, विपन्नता, दुख, विषाद, सामाजिक रुढ़ियों, प्रथाओं से आजीवन जूझते रहे। मगर दृढ़ निराला ने कभी हार नहीं मानी परिस्थितियों के सामने झुके नहीं। एक साधक की भाँति गीतों की रचना करते रहे।

निराला ने सड़क के आदमी को, साधारण आदमी को महत्व दिया। समाज के उन अभावग्रस्तों की करुणा का चित्रण किया जिनकी तरफ अबतक किसी ने ध्यान न दिया था। गरीबों, भिक्षुओं, विधवा, मजदूरिन आदि के दुखों का चित्रण निराला ही कर सकते थे इसलिए उन्होंने इन्हीं पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया।

छायावादी काव्य की प्रवृत्तियों के कारण निराला की कुछ कविताओं में अन्तर्मुखता आयी है किन्तु जब वे छायावाद से मोहभंग वाले पंथी बने तो उनमें विलक्षण ढ़ंग से हास्यपरकता, व्यंगपरकता तथा गजलोई आ गई और इन सबमें भी विद्रोह का स्वर देखा जा सकता है। विद्रोह व्यवस्था से, शोषित वर्ग से उन परिस्थितियों से जिसने दीन-हीनों को और भी दीन बना रखा था।